Dr. Madan Paswan, History | Lecture No. 30
Class: B.A. Part-II (Hons.) P.-III ई. | Date: 25.09.2020

Topic: Unit-III Disintegration and Decline (b) Saiyyed Dynasty.

खिज्र खाँ (1414-21 ई०):

सैयद वंश की स्थापना खिज्र खाँ ने की जिसका संबंध पैगम्बर मुहम्मद के वंश से था। इसी कारण इस नए वंश का नाम सैयद वंश पड़ा।

इसके शासन काल में पुराना दिल्ली राज्य विस्तार में घट कर एक छोटा रजवाड़ा-मात्र बन गया। फरिश्ता खिज्र खाँ को "एक ज्ञानी तथा परोपकारी राजा" के रूप में प्रशंसा करता है, पर वह शक्तिशाली नहीं था। 20 मई, 1421 को उसकी मृत्यु हो गई।

मुबारकशाह (1421-34 ई०):

इसके शासन काल में याहया बिन सरहिंदी ने अपनी 'तारीखे-मुबारकशाही' लिखी, जो इस काल के इतिहास के लिए बहुमूल्य साधन है। वह भटिंडा एवं दोआब के विद्रोहों को कुचलने तथा सीमित क्षेत्रों से कर वसूलने में सफल रहा। राज्यारोहण के तुरंत पश्चात, उसे खोखर जनजाति के सरदार जसरथ तथा तुगान रईस के विद्रोहों से निपटना पड़ा। इसके अलावा सुल्तान को मेवातियों तथा सैयद सलीम के पुत्रों के विद्रोहों को भी सामना करना पड़ा। 1426 ई० में बयाना अभियान तथा 1429-30 ई० में ग्वालियर अभियान किया गया। मुबारक शाह का समकालीन शर्की सुल्तान इब्राहीम शर्की से भी संघर्ष हुआ। 19 फरवरी, 1434 ई० को यमुना के किनारे मुबारकाबाद नामक एक नये आलीशान नगर के निर्माण के अधीक्षण के लिये जाते समय सुल्तान असंतुष्ट वजीर सरवरूलमुल्क के नेतृत्व में कुछ मुस्लिम एवं हिन्दू सरदारों द्वारा संगठित एक षड्यंत्र का शिकार बन गया।

मुहम्मद शाह (1434-43 ई०):

मुहम्मदशाह, मुबारकशाह का उत्तराधिकारी हुआ। उसके समय में 1436 ई० में समाना की ओर अभियान भेजा गया तथा जसरथ खोखर के विरुद्ध सेना भेजी गयी। लेकिन कुछ विशेष उपलब्धि नहीं हुई। लाहौर और सरहिंद के शासक बहलोल खाँ लोदी ने, जो मालवा के महमूदशाह खिलजी के राजधानी तक बढ़ जाने पर सुल्तान की सहायता करने आया था, शीघ्र दिल्ली पर अधिकार करने का प्रयत्न किया। यद्यपि वह तत्काल निष्फल रहा, पर सैयदों की स्थिति कमजोर होती गई।

Continue....